डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित 'पुस्तकायन' पुस्तक मेले का सातवाँ दिन
अपने प्रिय लेखक से मिलिए, चर्चा एवं रचना–पाठ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए आयोजित
पूरी ईमानदारी से लिखा गया चरित्र ही लोकप्रिय होता है – पारो आनंद
बाल साहित्य प्रकाशन की चुनौतियों से ही नई राह निकालनी होगी – प्रभात कुमार

नई दिल्ली। 17 नवंबर 2022; साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित किए गए 'पुस्तकायन' पुस्तक मेले के सातवें दिन 'अपने प्रिय लेखक से मिलिए' कार्यक्रम में प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका पारो आनंद ने बच्चों से बातचीत की और अपनी रचनाएँ भी सुनाईं। बच्चों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए बताया कि उन्होंने लिखना कक्षा सात में सीखा जबकि उन्होंने झूठ–झूठ में घर में एक बंदर होने की बात अपनी कक्षा में बताई। इसके चलते उन्हें कल्पना के सहारे बहुत सारे रोचक झूठ बोलने पड़े और उन्होंने पहली बार लगा कि इस तरह लिखकर वे बच्चों का मनोरंजन कर सकती हैं। लेकिन उन्होंने एक बात स्पष्ट की कि झूठ बोलना आगे चलकर हमेशा परेशान करता है और एक झूठ को छिपाने के लिए अनेक झूठ बोलने पड़ते हैं, जोकि उचित नहीं है। आगे उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए लिखना खाना बनाने जैसा है, जहाँ हमें कभी कल्पनाओं की आग तेज करनी होती है तो कभी धीमी, कभी कहानी को मज़ेदार बनाने के लिए कई मसाले डालने पड़ते हैं। कोई भी पात्र पाठकों को तब ही पसंद आता है जब पूरी ईमानदारी से उसकी रचना की जाए और ऐसा तब ही संभव जब कोई भी लेखक अपने खोल से निकलकर उस पात्र के शरीर को ओढ़ लेता है। उन्होंने कंगारू रू–रू की कहानी बड़े रोचक तरीके से प्रस्तुत की, जिसका बच्चों ने भरपूर आनंद लिया।

चर्चा एवं रचना–पाठ के अंतर्गत आज 'बाल साहित्य प्रकाशन के समक्ष चुनौतियाँ' विषय पर प्रभात कुमार की अध्यक्षता में विचार–विमर्श हुआ, जिसमें बाल लेखक और प्रकाशक बलराम अग्रवाल, चंदना दत्ता, मंजुळुरि कृष्णा कुमारी, पंकज चतुर्वेदी एवं सुशील शुक्ल ने अपने–अपने विचार साझा किए। बलराम अग्रवाल ने बाल लेखकों को बदलते समय के अनुसार स्वयं को अद्यतन रखने की जरूरत पर जोर दिया। चंदना दत्ता ने कहा कि बाल साहित्य को प्रकाशन की स्थिति इतनी निराशाजनक नहीं है, लेकिन फिर भी बच्चों की रुचियों के अनुसार बाल साहित्य को सुरुचिपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। तेलुगु की बाल लेखिका मंजुळुरि कृष्णा कुमारी ने कहा कि बच्चों का साहित्य प्रकाशित तो हो रहा है लेकिन वह शहरी स्कूलों तक ही सीमित है। अतः उसके समान वितरण की व्यवस्था करना भी प्रकाशकों का कर्त्तव्य है। पंकज चतुर्वेदी ने कहा कि हमारे बाल साहित्य में अभी भी पुराने मुहावरे ही चल रहे हैं, जबकि हमें उसके द्वारा बच्चों को लोकतंत्र और अन्य न्यायप्रणालियों के बारे में जागरुक करने की भी आवश्यकता है। उन्होंने अच्छे बाल साहित्य के लिए अच्छे बाल संपादकों की ज़रूरत होने पर बल दिया। सुशील शुक्ल ने कहा कि बाल लेखकों को भाषा के नए–नए मुहावरे गढ़कर कथन को सरल और उदार बनाना होगा। उन्होंने बच्चों को बहुत ज्यादा फुसलाने की भाषा प्रयुक्त करने पर भी एतराज जताया। अंत में, सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रभात कुमार ने कहा कि बाल साहित्य प्रकाशन के समक्ष चुनौतियाँ तो बहुत हैं लेकिन हमें चुनौतियों से ही नई राहें निकालनी होंगी। ऐसा बाल साहित्य में नवाचार के साथ ही हो पाएगा।

'आजादी के रंग बाल कलाकारों के संग' शीर्षक से आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला जो सीसीआरटी के सहयोग से आयोजित की जा रही है, में आज कथक नृत्य (प्रियंका छाबड़ा, वृति गुजराल), ओड़िसी नृत्य (अंजली पोलाइट) के अतिरिक्त अभिरूप ठाकुर ने बांसुरी वादन प्रस्तुत किया। ज्ञात हो कि 11 नवंबर से प्रारंभ हुए इस पुस्तक मेले का कल (18 नवंबर 2022) अंतिम दिन है।

के. श्रीनिवासराव

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone: +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax +91-11-2338 2428
E-mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website: http//www.sahitya-akademi.gov.in